बोधराज सीकरी की हनुमान चालीसा की मुहिम

पंजाब केसरी
ई-पेपर

EDITIONS
Gurgaon
Kesari

4/4

प्रभु श्रीराम का आदर्श जीवन मानव जीवन के लिए प्रेरणापुंज : बोधराज सीकरी

गुड़गांव, 18 मई (ब्यूरो) : स्वामी दिव्यानंद महाराज के पावन और पवित्र आश्रम जोकि ज्योति पार्क गुरुग्राम में स्थित है, स्वामी जी के आग्रह पर हनुमान चालीसा के पाठ की मुहिम के परिणामस्वरूप कल आश्रम में लगभग 800 साधकों ने पहले तो एक घंटा स्वामी जी के प्रवचन का आनंद लिया और ज्ञान की गंगा में डुबकी लगाई।

हनुमान चालीसा का पठन किया गया। स्वामी जी ने अपने वक्तव्य में बताया साधक को जिज्ञासा होनी चाहिए, साधक का जीवन एक दर्पण की तरह होना चाहिए ताकि उसको दर्पण अपनी सच्चाई बता सके। व्यक्ति को अपने मन की स्थिति भी मालूम होनी चाहिए। किसी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से तुलनात्मक दृष्टिकोण से मुकाबला नहीं करना चाहिए नहीं तो जीवन में गड़बड़ी होती है। व्यक्ति को समयक श्रोता बनना चाहिए। कथा से अपराध बोध के दर्शन होते हैं। उन्होंने प्रारम्भ में एक बार हनुमान चालीसा पाठ का संगीतमय तरीके से स्वयं गायन किया और फिर बोधराज सीकरी के मित्र गजेंद्र गोसाई जो निरंतर पिछले तीन महीनों से हनुमान चालीसा के पाठ को अपने सुर और स्वरों का एक नया रूप दे रहे हैं उसके माध्यम से उन्हें कहा कि अब आप संगीतमय तरीके से हनुमान चालीसा का पाठ करें।

हनुमान चालीसा के पाठ कार्यक्रम में मौजूद बोधराज सीकरी व अन्य।

गजेंद्र गोसाई ने अपने मुखारबिंद से अपने मधुर वाणी से 8 बार संगीतमय तरीके से पाठ किया। तदोपरांत अंत के दो पाठ स्वामी दिव्यानंद महाराज ने अपने मुखारबिंद से गाए और उसमें लोगों को प्रेरित किया कि नृत्य भी साथ में करेंगे।

छोटीबड़ीबात
आज ही के दिन 1934 में अंग्रेजी भाषा के प्रसिद्ध भारतीय लेखकों में से एक रस्किन बॉण्ड का जन्म हुआ था।
क्यूआर कोड स्कैन कर पढ़ें दैनिक भास्कर पर
dainikbhaskarup.com

देश का विश्वसनीय अखबार
दैनिक भास्कर
झांसी, नोएडा, लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित

प्रभु श्रीराम का आदर्श जीवन मानव जीवन के लिए प्रेरणापुंज : बोधराज सीकरी

भास्कर ब्यूरो

गुरुग्राम। बुधवार को स्वामी दिव्यानंद महाराज के पावन और पवित्र आश्रम जोकि ज्योति पार्क गुरुग्राम में स्थित है, स्वामी जी द्वारा बोधराज सीकरी को परसो आग्रह किया कि ये जो हनुमान चालीसा के पाठ की मुहिम आपने शुरू की है उसका आनंद बहुत सारे साधकों ने लिया और बहुत सारे साधक इस आनंद से वंचित रह गए हैं और वो आने वाले अंतिम दिन यानी सत्संग का जो चौथा दिन है उसमें भी आनंद के लिए आएंगे व पुनः यह कार्यक्रम आयोजित किया जाए। उसके परिणामस्वरूप कल आश्रम में लगभग 800 साधकों ने पहले तो एक घंटा स्वामी जी के प्रवचन का आनंद लिया और ज्ञान की गंगा में डुबकी लगाई। उसके उपरांत हनुमान चालीसा के पाठ का पठन किया गया। स्वामी जी ने अपने वक्तव्य में बताया साधक को जिज्ञासा होनी चाहिए, साधक का जीवन एक दर्पण की तरह होना चाहिए ताकि उसको दर्पण अपनी सच्चाई बता सके। व्यक्ति को अपने मन की स्थिति भी मालूम होनी चाहिए। किसी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से तुलनात्मक दृष्टिकोण से मुकाबला नहीं करना चाहिए नहीं तो जीवन में गड़बड़ी होती है। उन्होंने प्रारम्भ में एक बार हनुमान चालीसा पाठ का संगीतमय तरीके से स्वयं गायन किया और फिर बोधराज सीकरी के मित्र गजेंद्र गोसाई जो निरंतर पिछले तीन महीनों से हनुमान चालीसा के पाठ को अपने सुर और स्वरों का एक नया रूप दे रहे हैं उसके माध्यम से उन्हें कहा कि अब आप संगीतमय तरीके से हनुमान चालीसा का पाठ करें। उसके उपरांत बोधराज सीकरी से कहा गया कि वे समापन की और आगे बढ़ें। बोधराज सीकरी ने अपने वक्तव्य में स्वामी जी का जहां एक और आभार प्रकट किया।

www.gurgaontoday.in

गुड़गांव टुडे

प्रभु श्रीराम का आदर्श जीवन मानव जीवन के लिए प्रेरणापुंज : बोधराज सीकरी

- **बोधराज सीकरी द्वारा चलाई जा रही श्री हनुमान चालीसा पाठ की मुहिम नया रंग लाई।**
- **परम श्रद्धेय स्वामी दिव्यानंद महाराज द्वारा मिला बोधराज सीकरी को विशेष आशीर्वाद।**

गुड़गांव टुडे, गुरुग्राम

स्वामी दिव्यानंद महाराज के पावन और पवित्र आश्रम जोकि ज्योति पार्क गुरुग्राम में स्थित है, स्वामी जी द्वारा बोधराज सीकरी को परसों आग्रह किया कि वे जो हनुमान चालीसा के पाठ की मुहिम आपने शुरू की है उसका आनंद बहुत सारे साधकों ने लिया और बहुत सारे साधक इस आनंद से वंचित रह गए हैं और जो आने वाले अंतिम दिन यानी सत्संग का जो चौथा दिन है उसमें भी आनंद के लिए आएंगे व पुनः यह कार्यक्रम आयोजित किया जाए। उसके परिणामस्वरूप कल आश्रम में लगभग 800 साधकों ने पहले तो एक घंटा स्वामी जी के प्रवचन का आनंद लिया और ज्ञान की गंगा में डुबकी लगाई। उसके उपरांत हनुमान चालीसा के पाठ का पठन किया गया। स्वामी जी ने अपने वक्तव्य में बताया साधक को जिज्ञासा होनी चाहिए, साधक का जीवन एक दर्पण की तरह होना चाहिए ताकि उसको दर्पण अपनी सच्चाई बता सके। व्यक्ति को अपने मन की स्थिति भी मालूम होनी चाहिए। किसी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से तुलनात्मक दृष्टिकोण से मुकाबला नहीं करना चाहिए नहीं तो जीवन में गड़बड़ी होती है। व्यक्ति को समयक श्रोता बनना चाहिए। उनके अनुसार कथा से अगाध बोध के दर्शन होते हैं।

महाराज जी ने अपने वक्तव्य में बताया कि व्यक्ति को जब किसी भी कथा या आयोजन में सम्मिलित होना हो तो ना केवल वो सुनें बल्कि उस विषय का अध्ययन करें, स्वाध्ययन करें, समीक्षा करें, मंथन करें और फिर चिंतन करें। इस प्रकार वो विषय उसके मन के पटल पर बैठ जाएगा। महाराज श्री ने हनुमान चालीसा के ऐसे-ऐसे रहस्य उजागर किये जो पहले कभी नहीं सुने थे। उन्होंने प्रारम्भ में एक बार हनुमान चालीसा पाठ का संगीतमय तरीके से स्वयं गायन किया और फिर बोधराज सीकरी के मित्र गजेंद्र गोसाई जो निरंतर पिछले तीन महीनों से हनुमान चालीसा के पाठ को अपने सुर और स्वरों का एक नया रूप दे रहे हैं उसके माध्यम से उन्हें कहा कि अब आप संगीतमय तरीके से हनुमान चालीसा का पाठ करें। गजेंद्र गोसाई ने अपने मुखारविंद से अपने मधुर वाणी से 8 बार संगीतमय तरीके से पाठ किया। तदोपरांत अंत के दो पाठ स्वामी दिव्यानंद महाराज ने अपने मुखारविंद से गाए और उसमें लोगों को प्रेरित किया कि नृत्य भी साथ में करेंगे।

आखिरी दो हनुमान चालीसा पाठ का पठन संगीतमय तरीके से उसमें लगभग 800 साधकों को डांडिया दिया गया और डांडिया के माध्यम से गायकी के माध्यम से साथ में भजन और गुरुदेव के नए-नए शब्दों का मिश्रण करके हनुमान चालीसा पाठ के साथ-साथ नृत्य का दृश्य देखने के लायक था।

उसके उपरांत बोधराज सीकरी से कहा गया कि वे समापन की और आगे बढ़ें। बोधराज सीकरी ने अपने वक्तव्य में स्वामी जी का जहां एक और आभार प्रकट किया क्योंकि उन्होंने लोगों को दो दिन निरंतर हनुमान चालीसा के पाठ का संगीतमय तरीके से पठन करने का अवसर प्रदान किया। बोधराज सीकरी ने बताया कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम न केवल राक्षसों का वध करने के लिए बल्कि पर्यावरण को संतुलित करने के लिए उन्होंने जन्म लिया। क्योंकि उन्होंने बहुत ही सुंदर कविता पढ़कर सुनाई जिसमें पृथ्वी माँ भगवान विष्णु के पास हाहाकार करती हुई जाती है और राक्षसों के द्वारा किये गए अत्याचार के बारे में बताती है। तो भगवान विष्णु से उन्हें क्या उत्तर दिया

पृथ्वी ए मेरी प्यारी पृथ्वी,
मैं तेरा ताप मिटाता हूँ (यहां ताप का अभिप्राय ग्लोबल वार्मिंग से है)
पृथ्वी ए मेरी प्यारी पृथ्वी
मैं तेरा ताप मिटाता हूँ।
दशरथ के यहां राम बनकर
अतिशीघ्र अवध में आता हूँ ग्र
भक्तों अब तुम निश्चिंत रहो
अब तुम्हें ना कोई भय होगा।
यह धरणी होगी धरा धाम, धरणी धर का अभिनव होगा।
सुन सकते नहीं कान मेरे अत्याधिक पुकार अधीनों की, ये पृथ्वी होगी वीरों की
पृथ्वी न होगी हीनों की।

इस प्रकार अपने मन के उद्गार रखे और अंत मे वेद के एक मंत्र जो यज्ञ करते समय प्रायः 5 बार उच्चारित किया जाता है। इसमें प्रजा और पशु दो शब्दों का वर्णन है। प्रजा का अभिप्राय संतान से और पशु का अभिप्राय हमारी गौमाता से है। इस प्रकार उस मंत्र की भी बोधराज सीकरी ने सकुशल व्याख्या करी और अंत में महाराज श्री के चरणों में नतमस्तक हो उनसे आशीर्वाद ग्रहण किया। उसके बाद प्रसाद वितरित किया गया।

इस कार्यक्रम में धर्मेंद्र बजाज, ज्योत्सना बजाज, रचना बजाज, शशि बजाज, राजेश गाबा(प्रधान गीता आश्रम), हरीश संगीतज्ञ, रमेश कुमार, ओ.पी कालरा, चंचल, रमेश कामरा,रामलाल ग्रोवर, एम.के अरोड़ा, हरविंद कोहली, ओमप्रकाश कथूरिया, चूनी लाल शर्मा, रमेश मुंजाल, द्वारका दास कक्कड़, पुनीत कथूरिया, नरेंद्र कथूरिया, राजपाल आहूजा, सुभाष ग्रोवर एडवोकेट व अन्य जन उपस्थित रहे।

आठ सौ लोगों ने दस-दस बार पाठ करके आठ हज़ार का आंकड़ा स्पर्श किया। पाठ की कुल संख्या कल तक 8000 रही। 172600 की पहले की संख्या कल की आठ हज़ार से मिला कर 180600 को छू गई।

नये भारत का अखबार

गुड़गांव मेल

DAVP, Northern Rly., DIPR Haryana के विज्ञापनों के लिए अधिकृत हरियाणा के सभी जिलों, चण्डीगढ़ और दिल्ली में प्रसारित

प्रभु श्रीराम का आदर्श जीवन मानव जीवन के लिए प्रेरणापुंज : बोधराज सीकरी

ब्यूरो/गुड़गांव मेल

गुड़गांव, 18 मई। स्वामी दिव्यानंद महाराज के पावन और पवित्र आश्रम जोकि ज्योति पार्क गुरुग्राम में स्थित है, स्वामी जी द्वारा बोधराज सीकरी को परसों आग्रह किया कि वे जो हनुमान चालीसा के पाठ की मुहिम आपने शुरू की है उसका आनंद बहुत सारे साधकों ने लिया और बहुत सारे साधक इस आनंद से वंचित रह गए हैं और जो आने वाले अंतिम दिन यानी सत्संग का जो चौथा दिन है उसमें भी आनंद के लिए आएंगे व पुनः यह कार्यक्रम आयोजित किया जाए। उसके परिणामस्वरूप कल आश्रम में लगभग 800 साधकों ने पहले तो एक घंटा स्वामी जी के प्रवचन का आनंद लिया और ज्ञान की गंगा में डुबकी लगाई। उसके उपरांत हनुमान चालीसा के पाठ का पठन किया गया। स्वामी जी ने अपने वक्तव्य में बताया साधक को जिज्ञासु होनी चाहिए, साधक का जीवन एक दर्पण की तरह होना चाहिए ताकि उसको दर्पण अपनी सच्चाई बता सके। व्यक्ति को अपने मन की स्थिति भी मालूम होनी चाहिए। किसी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से तुलनात्मक दृष्टिकोण से मुकाबला नहीं करना चाहिए नहीं तो जीवन में गड़बड़ी होती है। व्यक्ति को सम्यक श्रोता बनना चाहिए। उनके अनुसार कथा से अपराध बोध के दर्शन होते हैं। उन्होंने आगे बताया कि राजा दशरथ के मन की स्थिति मृत्यु के समय क्या थी उसके मन के ऊपर एक उस दर्पण का दृश्य नजर आ रहा था जब श्रवण कुमार के माता-पिता ने उन्हें श्राप दिया था। इस प्रकार स्वामीजी ने बताया कि आज के कई नेता संपत्ति और सुविधाएं नागरिकों को देने में लगे हैं। इस प्रकार की संपत्ति और सुविधाएं मर्यादा पुरुषोत्तम राम भी दिया करते थे परंतु मर्यादा पुरुषोत्तम राम उसके साथ संस्कार और कर्तव्यपरायणता भी अपने नागरिकों को और प्रजा को सिखाते थे। दुर्भाग्य की बात है कि आज का नेता ये सुविधाएं तो उन्हें दे रहा है परन्तु उन्हें संस्कारविहीन और कर्तव्यपरायणता विहीन बना रहा है जिसके कारण नागरिक आलसी बनता है।

महाराज जी ने अपने वक्तव्य में बताया कि व्यक्ति को जब किसी भी कथा या आयोजन में सम्मिलित होना हो तो ना केवल वो सुनें बल्कि उस विषय का अध्ययन करें, स्वाध्याय करें, समीक्षा करें, मंथन करें और फिर चिंतन करें। इस प्रकार वो विषय उसके मन के पटल पर बैठ जाएगा। महाराज श्री ने हनुमान चालीसा के ऐसे-ऐसे रहस्य उजागर किये जो पहले कभी नहीं सुने थे। उन्होंने प्रारम्भ में एक बार हनुमान चालीसा पाठ का संगीतमय तरीके से स्वयं गायन किया और फिर बोधराज सीकरी के मित्र गजेंद्र गोसाई जो निरंतर पिछले तीन महीनों से हनुमान चालीसा के पाठ को अपने सुर और स्वरों का एक नया रूप दे रहे हैं उसके माध्यम से उन्हें कहा कि अब आप संगीतमय तरीके से हनुमान चालीसा का पाठ करें।

गजेंद्र गोसाई ने अपने मुखारबिंद से अपने मधुर वाणी से 8 बार संगीतमय तरीके से पाठ किया। तदोपरांत अंत के दो पाठ स्वामी दिव्यानंद महाराज ने अपने मुखारबिंद से गाए और उसमें लोगों को प्रेरित किया कि नृत्य भी साथ में करेंगे।

आखिरी दो हनुमान चालीसा पाठ का पठन संगीतमय तरीके से उसमें लगभग 800 साधकों को डांडिया दिया गया और डांडिया के माध्यम से साधकों के माध्यम से साथ में भजन और गुरुदेव के नए-नए शब्दों का मिश्रण करके हनुमान चालीसा पाठ के साथ-साथ नृत्य का दृश्य देखने के लायक था।

उसके उपरांत बोधराज सीकरी से कहा गया कि वे समापन की और आगे बढ़ें। बोधराज सीकरी ने अपने वक्तव्य में स्वामी जी का जहां एक और आभार प्रकट किया क्योंकि उन्होंने लोगों को दो दिन निरंतर हनुमान चालीसा के पाठ का संगीतमय तरीके से पठन करने का अवसर प्रदान किया। बोधराज सीकरी ने बताया कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम न केवल राक्षसों का नाश करने के लिए बल्कि पर्यावरण को संतुलित करने के लिए उन्होंने जन्म लिया। क्योंकि उन्होंने बहुत ही सुंदर कविता पढ़कर सुनाई जिसमें पृथ्वी माँ भगवान विष्णु के पास हाहाकार करती हुई जाती है और राक्षसों के द्वारा किये गए अत्याचार के बारे में बताती है। तो भगवान विष्णु ने उन्हें क्या उत्तर दिया :

पृथ्वी ए मेरी प्यारी पृथ्वी,
मैं तेरा ताप मिटाता हूं (यहां ताप का अभिप्राय ग्लोबल वार्मिंग से है)
पृथ्वी ए मेरी प्यारी पृथ्वी
मैं तेरा ताप मिटाता हूं।
दशरथ के यहां राम बनकर
अतिशीघ्र अवध में आता हूं व
भक्तों अब तुम निश्चिंत रहो
अब तुम्हें ना कोई भय होगा। यह धरणी होगी धन धाम, धरणी पर का अभिनय होगा व
सुन सकते नहीं कान मेरे आत्मिक पुकार अधीरों की, वे पृथ्वी होगी वीरों की
पृथ्वी न होगी हीरों की।

इस प्रकार अपने मन के उद्गार रखे और अंत में वेद के एक मंत्र जो यज्ञ करते समय प्रायः 5 बार उच्चारित किया जाता है। इसमें प्रजा और पशु दो शब्दों का वर्णन है। प्रजा का अभिप्राय संतान से और पशु का अभिप्राय हमारी गौमाता से है। इस प्रकार उस मंत्र की भी बोधराज सीकरी ने सकुशल व्याख्या करी और अंत में महाराज श्री के चरणों में नतमस्तक हो उनसे आशीर्वाद ग्रहण किया।

उसके बाद प्रसाद वितरित किया गया।

इस कार्यक्रम में धर्मेंद्र बजाज, ज्योत्सना बजाज, रचना बजाज, शशि बजाज, राजेश गाबा(प्रधान गीता आश्रम), हरीश संगीतम, रमेश कुमार, ओ.पी कालरा, चंचल, रमेश कामरा,रामलाल ग्रोवर, एस.के अरोड़ा, हरविंद कोहली, ओमप्रकाश कथूरिया, चुन्नी लाल शर्मा, रमेश मुंजाल, द्वारका दास कक्कड़, पुनीत कथूरिया, नरेंद्र कथूरिया, राजपाल आहूजा, सुभाष ग्रोवर एडवोकेट व अन्य जन उपस्थित रहे।

आठ सौ लोगों ने दस-दस बार पाठ करके आठ हज़ार का आँकड़ा स्पर्श किया। पाठ की कुल संख्या कल तक 8000 रही। 172600 की पहले की संख्या कल की आठ हज़ार से मिला कर 180600 को छू गई।

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

ह्यूमन इंडिया

हम बनेंगे आपकी आवाज

बोधराज सीकरी द्वारा चलाई जा रही श्री हनुमान चालीसा पाठ की मुहिम नया रंग लाई

स्वामी दिव्यानंद महाराज द्वारा मिला बोधराज सीकरी को विशेष आशीर्वाद

● प्रभु श्रीराम का आदर्श जीवन मानव जीवन के लिए प्रेरणापुंज : बोधराज सीकरी

: 8

बुलंद खोज

सम्पादक-संजय सार्थक

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार-पत्र

बोधराज सीकरी द्वारा चलाई जा रही श्री हनुमान चालीसा पाठ की मुहिम नया रंग लाई।

गीताज्ञानेश्वर स्वामी दिव्यानंद महाराज द्वारा मिला बोधराज सीकरी को विशेष आशीर्वाद

प्रभु श्रीराम का आदर्श जीवन मानव जीवन के लिए प्रेरणापुंज बोधराज सीकरी

गुरुग्राम, बुलंद खोज / लोकेश कुमार। गीता ज्ञानेश्वर स्वामी दिव्यानंद महाराज के पावन और पवित्र आश्रम जोकि ज्योति पार्क गुरुग्राम में स्थित है, स्वामी जी द्वारा बोधराज सीकरी को परसो आग्रह किया कि ये जो हनुमान चालीसा के पाठ की मुहिम आपने शुरू की है उसका आनंद बहुत सारे साधकों ने लिया और बहुत सारे साधक इस आनंद से वंचित रह गए हैं और वो आने वाले अंतिम दिन यानी सत्संग का जो चौथा दिन है उसमें भी आनंद के लिए आएंगे व पुन यह कार्यक्रम आयोजित किया जाए। उसके परिणामस्वरूप कल आश्रम में लगभग 800 साधकों ने पहले तो एक घंटा स्वामी जी के प्रवचन का आनंद लिया और ज्ञान की गंगा में डुबकी लगाई। उसके उपरांत हनुमान चालीसा के पाठ का पठन किया गया। स्वामी जी ने अपने वक्तव्य में बताया साधक को जिज्ञासा होनी चाहिए, साधक का जीवन एक दर्पण की तरह होना चाहिए ताकि उसको दर्पण अपनी सच्चाई बता सके। व्यक्ति को अपने मन की स्थिति भी मालूम होनी चाहिए। किसी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से तुलनात्मक दृष्टिकोण से मुकाबला नहीं करना चाहिए नहीं तो जीवन में गड़बड़ी होती है। व्यक्ति को समयक श्रोता बनना चाहिए। उनके अनुसार कथा से अपराध बोध के दर्शन होते हैं। उन्होंने आगे बताया कि राज दशरथ के मन की स्थिति मृत्यु के समय

कार्यक्रम में शामिल श्रद्धालु।

क्या थी उसके मन के ऊपर एक उस दर्पण का दृश्य नजर आ रहा था जब श्रवण कुमार के माता-पिता ने उन्हें श्राप दिया था। इस प्रकार स्वामीजी ने बताया कि आज के कई नेता संपत्ति और सुविधाएं नागरिकों को देने में लगे हैं। इस प्रकार की संपत्ति और सुविधाएं मर्यादा पुरुषोत्तम राम भी दिया करते थे परंतु मर्यादा पुरुषोत्तम राम उसके साथ संस्कार और कर्तव्यपरायणता भी अपने नागरिकों को और प्रजा को सिखाते थे। दुर्भाग्य की बात है कि आज का नेता ये सुविधाएं तो उन्हें दे रहा है परन्तु उन्हें संस्कारविहीन और कर्तव्यपरायणता विहीन बना रहा है जिसके कारण नागरिक आलसी बनता है। महाराज जी ने अपने वक्तव्य में बताया कि व्यक्ति को जब किसी भी कथा या आयोजन में सम्मिलित होना हो तो ना केवल वो सुनें बल्कि उस विषय का अध्ययन करें, स्वाध्ययन करें, समीक्षा करें, मंथन करें और फिर चिंतन करें। इस प्रकार वो विषय उसके मन के पटल पर बैठ जाएगा। महाराज श्री ने हनुमान चालीसा के ऐसे-ऐसे रहस्य उजागर किये जो पहले कभी नहीं सुने थे। उन्होंने प्रारम्भ में एक बार हनुमान चालीसा पाठ का संगीतमय तरीके से स्वयं गायन किया और फिर बोधराज सीकरी के मित्र गजेंद्र गोसाई जो निरंतर पिछले तीन महीनों से हनुमान चालीसा के पाठ को अपने सुर और स्वरों का एक नया रूप दे रहे हैं उसके माध्यम से उन्हें कहा कि अब आप संगीतमय तरीके से हनुमान चालीसा का पाठ करें।

गजेंद्र गोसाई ने अपने मुखारबिंद से अपने मधुर वाणी से 8 बार संगीतमय तरीके से पाठ किया। तदोपरांत अंत के दो पाठ स्वामी दिव्यानंद महाराज ने अपने मुखारबिंद से गाए और उसमें लोगों को प्रेरित किया कि नृत्य भी साथ में करेंगे। आखिरी दो हनुमान चालीसा पाठ का पठन संगीतमय तरीके से उसमें लगभग 800 साधकों को डांडिया दिया गया और डांडिया के माध्यम से गायकी के माध्यम से साथ में भजन और गुरुदेव के नए-नए शब्दों का मिश्रण करके हनुमान चालीसा पाठ के साथ-साथ नृत्य का दृश्य देखने के लायक था। बोधराज सीकरी से कहा गया कि वे समापन की और आगे बढ़ें। बोधराज सीकरी ने अपने वक्तव्य में स्वामी जी का जहां एक और आभार प्रकट किया क्योंकि उन्होंने लोगों को दो दिन निरंतर हनुमान चालीसा के पाठ का संगीतमय तरीके से पठन करने का अवसर प्रदान किया। बोधराज सीकरी ने बताया कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने केवल राक्षसों का वध करने के लिए बल्कि पर्यावरण को संतुलित करने के लिए उन्होंने जन्म लिया। क्योंकि उन्होंने बहुत ही सुंदर कविता पढ़कर सुनाई जिसमें पृथ्वी माँ भगवान विष्णु के पास हाहाकार करती हुई जाती है और राक्षसों के द्वारा किये गए अत्याचार के बारे में बताती है। इस प्रकार अपने मन के उद्गार रखे और अंत मे वेद के एक मंत्र जो यज्ञ करते समय प्राय 5 बार उच्चारित किया जाता है। इसमें प्रजा और पशु दो शब्दों का वर्णन है। प्रजा का अभिप्राय संतान से और पशु का अभिप्राय हमारी गौमाता से है।

इस प्रकार उस मंत्र की भी बोधराज सीकरी ने सकुशल व्याख्या करी और अंत में महाराज श्री के चरणों में नतमस्तक हो उनसे आशीर्वाद ग्रहण किया। इस कार्यक्रम में धर्मेंद्र बजाज, ज्योत्सना बजाज, रचना बजाज, शशि बजाज, राजेश गाबा(प्रधान गीता आश्रम), हरीश संगीतज्ञ, रमेश कुमार, ओ.पी कालरा, चंचल, रमेश कामरा,रामलाल ग्रोवर, एम.के अरोड़ा, हरविंद कोहली, ओमप्रकाश कथूरिया, चूनी लाल शर्मा, रमेश मुंजाल, द्वारका दास ककड़, पुनीत कथूरिया, नरेंद्र कथूरिया, राजपाल आहूजा, सुभाष ग्रोवर एडवोकेट व अन्य जन उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय दैनिक
संस्थापक अमर कर्मयोगी स्व. श्री तिलकराज जी भाटिया
जगत क्रान्ति
वर्ष : 44 अंक : 137
जीन्द
शुक्रवार, 19 मई, 2023
पृष्ठ 12 | मूल्य ₹2

हरियाणा का सर्वमान्य लोकप्रिय हिन्दी दैनिक | E-paper : http://jagatkranti.co.in | E-mail: jagatkrantijind@gmail.com | जीन्द (हरियाणा) से प्रकाशित

प्रभु श्रीराम का आदर्श जीवन मानव जीवन के लिए प्रेरणापुंज : बोधराज सीकरी

जगत क्रान्ति ⏭ एमके अरोड़ा

गुरुग्राम : ज्योति पार्क स्थित श्रीगीता आश्रम में गीता ज्ञानेश्वर डा. स्वामी दिव्यानंद महाराज के आशीर्वाद से सत्संग के चौथे दिन यानि कि समापन पर पुन~ हनुमान चालीसा पाठ मुहिम के तहत कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें करीब 800 साधकों ने जहां महाराज जी के प्रवचनों का आनंद लिया, वहीं हनुमान चालीसा पाठ का पठन भी किया। स्वामी दिव्यानंद महाराज ने कहा कि साधक को जिज्ञासा होनी चाहिए, साधक का जीवन एक दर्पण की तरह होना चाहिए ताकि उसको दर्पण अपनी सच्चाई बता सके। व्यक्ति को अपने मन की स्थिति भी मालूम होनी चाहिए। किसी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से तुलनात्मक दृष्टिकोण से मुकाबला नहीं करना चाहिए नहीं तो जीवन में गड़बड़ी होती है। व्यक्ति को समयक श्रोता बनना चाहिए। उनके अनुसार कथा से अपराध बोध के दर्शन होते हैं। उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि राज दशरथ के मन की स्थिति मृत्यु के समय क्या थी, उसके मन के ऊपर एक उस दर्पण का दृश्य नजर आ रहा था। जब श्रवण कुमार के माता-पिता ने उन्हें श्राप दिया था। उन्होंने बताया कि आज के कई नेता संपत्ति और सुविधाएं नागरिकों को देने में लगे हैं। इस प्रकार की संपत्ति और सुविधाएं मर्यादा पुरुषोत्तम राम भी दिया करते थे परंतु मर्यादा पुरुषोत्तम राम उसके साथ संस्कार और कर्तव्यपरायणता भी अपने नागरिकों को और प्रजा को सिखाते थे।

करण अमर भारती एक उम्मीद

प्रभु श्रीराम का आदर्श जीवन मानव जीवन के लिए प्रेरणापुंज : बोधराज सीकरी

अमर भारती संवाददाता

गुरुग्राम। स्वामी दिव्यानंद महाराज के पावन और पवित्र आश्रम जोकि ज्योति पार्क गुरुग्राम में स्थित है, स्वामी जी द्वारा बोधराज सीकरी को परसो आग्रह किया कि ये जो हनुमान चालीसा के पाठ की मुहिम आपने शुरू की है उसका आनंद बहुत सारे साधकों ने लिया और बहुत सारे साधक इस आनंद से वंचित रह गए हैं और वो आने वाले अंतिम दिन यानी सत्संग का जो चौथा दिन है उसमें भी आनंद के लिए आएंगे व पुन: यह कार्यक्रम आयोजित किया जाए। उसके परिणामस्वरूप कल आश्रम में लगभग 800 साधकों ने पहले तो एक घंटा स्वामी जी के प्रवचन का आनंद लिया और ज्ञान की गंगा में डुबकी लगाई। उसके उपरांत हनुमान चालीसा के पाठ का पठन किया गया।

स्वामी जी ने अपने वक्तव्य में बताया साधक को जिज्ञासा होनी चाहिए, साधक का जीवन एक दर्पण की तरह होना चाहिए ताकि उसको दर्पण अपनी सच्चाई बता सके। व्यक्ति को अपने मन की स्थिति भी मालूम होनी चाहिए। किसी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से तुलनात्मक दृष्टिकोण से मुकाबला नहीं करना चाहिए नहीं तो जीवन में गड़बड़ी होती है। व्यक्ति को समयक श्रोता बनना चाहिए। गजेंद्र गोसाई ने अपने मुखारविंद से अपने मधुर वाणी से 8 बार संगीतमय तरीके से पाठ किया। बोधराज सीकरी ने बताया कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम न केवल राक्षसों का वध करने के लिए बल्कि पर्यावरण को संतुलित करने के लिए उन्होंने जन्म लिया।

राष्ट्रीय दैनिक ई-पेपर

भारत सारथी

बोधराज सीकरी द्वारा चलाई जा रही श्री हनुमान चालीसा पाठ की मुहिम नया रंग लाई

परम श्रद्धेय स्वामी दिव्यानंद महाराज द्वारा मिला बोधराज सीकरी को विशेष आशीर्वाद

प्रभु श्रीराम का आदर्श जीवन मानव जीवन के लिए प्रेरणापुंज : बोधराज सीकरी

भारत सारथी

गुरुग्राम। कल दिनांक 17-05-2023 को स्वामी दिव्यानंद महाराज के पावन और पवित्र आश्रम जोकि ज्योति पार्क गुरुग्राम में स्थित है, स्वामी जी द्वारा बोधराज सीकरी को परसो आग्रह किया कि वे जो हनुमान चालीसा के पाठ की मुहिम आपने शुरू की है उसका आनंद बहुत सारे साधकों ने लिया और बहुत सारे साधक इस आनंद से वंचित रह गए हैं और वो आने वाले अंतिम दिन यानी सत्संग का जो चौथा दिन है उसमें भी आनंद के लिए आएंगे व पुन: यह कार्यक्रम आयोजित किया जाए। उसके परिणामस्वरूप कल आश्रम में लगभग 800 साधकों ने पहले तो एक घंटा स्वामी जी के प्रवचन का आनंद लिया और ज्ञान की गंगा में डुबकी लगाई। उसके उपरांत हनुमान चालीसा के पाठ का पठन किया गया। स्वामी जी ने अपने वक्तव्य में बताया साधक को जिज्ञासा होनी चाहिए, साधक का जीवन एक दर्पण की तरह होना चाहिए ताकि उसको दर्पण अपनी सच्चाई बता सके। व्यक्ति को अपने मन की स्थिति भी मालूम होनी चाहिए। किसी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से तुलनात्मक दृष्टिकोण से मुकाबला नहीं करना चाहिए नहीं तो जीवन में गड़बड़ी होती है। व्यक्ति को समयक श्रोता बनना चाहिए। उनके अनुसार कथा से अपराध बोध के दर्शन होते हैं। उन्होंने आगे बताया कि राज दशरथ के मन की स्थिति मृत्यु के समय क्या थी उसके मन के ऊपर एक उस दर्पण का दृश्य नज़र आ रहा था जब श्रवण कुमार के माता-पिता ने उन्हें श्राप दिया था। इस प्रकार स्वामीजी ने बताया कि आज के कई नेता संपत्ति और सुविधाएं नागरिकों को देने में लगे हैं। इस प्रकार की संपत्ति और सुविधाएं मर्यादा पुरुषोत्तम राम भी दिया करते थे परंतु मर्यादा पुरुषोत्तम राम उसके साथ संस्कार और कर्तव्यपरायणता भी अपने नागरिकों को और प्रजा को सिखाते थे। दुर्भाग्य की बात है कि आज का नेता ये सुविधाएं तो उन्हें दे रहा है परन्तु उन्हें संस्कारविहीन और कर्तव्यपरायणता विहीन बना रहा है जिसके कारण नागरिक आलसी बनता है।

महाराज जी ने अपने वक्तव्य में बताया कि व्यक्ति को जब किसी भी कथा या आयोजन में सम्मिलित होना हो तो ना केवल वो सुनें बल्कि उस विषय का अध्ययन करें, स्वाध्ययन करें, समीक्षा करें, मंथन करें और फिर चिंतन करें। इस प्रकार वो विषय उसके मन के पटल पर बैठ जाएगा। महाराज श्री ने हनुमान चालीसा के ऐसे-ऐसे रहस्य उजागर किये जो पहले कभी नहीं सुने थे। उन्होंने प्रारम्भ में एक बार हनुमान चालीसा पाठ का संगीतमय तरीके से स्वयं गायन किया और फिर बोधराज सीकरी के मित्र गजेंद्र गोसाईं जो निरंतर पिछले तीन महीनों से हनुमान चालीसा के पाठ को अपने सुर और स्वरों का एक नया रूप दे रहे हैं उसके माध्यम से उन्हें कहा कि अब आप संगीतमय तरीके से हनुमान चालीसा का पाठ करें।

गजेंद्र गोसाईं ने अपने मुखारबिंद से अपने मधुर वाणी से 8 बार संगीतमय तरीके से पाठ किया। तदोपरांत अंत के दो पाठ स्वामी दिव्यानंद महाराज ने अपने मुखारबिंद से गाए और उसमें लोगों को प्रेरित किया कि नृत्य भी साथ में करेंगे।

आखिरी दो हनुमान चालीसा पाठ का पठन संगीतमय तरीके से उसमें लगभग 800 साधकों को डांडिया दिया गया और डांडिया के माध्यम से गायकी के माध्यम से साथ में भजन और गुरुदेव के नए-नए शब्दों का मिश्रण करके हनुमान चालीसा पाठ के साथ साथ नृत्य का दृश्य देखने के लायक था।

उसके उपरांत बोधराज सीकरी से कहा गया कि वे समापन की और आगे बढ़ें। बोधराज सीकरी ने अपने वक्तव्य में स्वामी जी का जहां एक और आभार प्रकट किया क्योंकि उन्होंने लोगों को दो दिन निरंतर हनुमान चालीसा के पाठ का संगीतमय तरीके से पठन करने का अवसर प्रदान किया। बोधराज सीकरी ने बताया कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम न केवल राक्षसों का वध करने के लिए बल्कि पर्यावरण को संतुलित करने के लिए उन्होंने जन्म लिया। क्योंकि उन्होंने बहुत ही सुंदर कविता पढ़कर सुनाई जिसमें पृथ्वी माँ भगवान विष्णु के पास हाहाकार करती हुई जाती है और राक्षसों के द्वारा किये गए अत्याचार के बारे में बताती है। तो भगवान विष्णु से उन्हें क्या उत्तर दिया :

पृथ्वी ए मेरी प्यारी पृथ्वी,
मैं तेरा ताप मिटाता हूँ (यहां ताप का अभिप्राय ग्लोबल वार्मिंग से है)
पृथ्वी ए मेरी प्यारी पृथ्वी
मैं तेरा ताप मिटाता हूँ।
दशरथ के यहां राम बनकर
अतिशीघ्र अवध में आता हूँ घ
भक्तों अब तुम निश्चिंत रहो
अब तुम्हें ना कोई भय होगा। वह धरणी होगी धरा धाम, धरणी धर का अभिनय होगा घ
सुन सकते नहीं कान मेरे अत्याधिक पुकार अधीनों की, वे पृथ्वी होगी वीरों की
पृथ्वी न होगी हीनों की।

इस प्रकार अपने मन के उद्गार रखे और अंत मे वेद के एक मंत्र जो यज्ञ करते समय प्राय: 5 बार उच्चारित किया जाता हैं। इसमें प्रजा और पशु दो शब्दों का वर्णन है। प्रजा का अभिप्राय संतान से और पशु का अभिप्राय हमारी गौमाता से है। इस प्रकार उस मंत्र की भी बोधराज सीकरी ने सकुशल व्याख्या करी और अंत में महाराज श्री के चरणों में नतमस्तक हो उनसे आशीर्वाद ग्रहण किया। उसके बाद प्रसाद वितरित किया गया।

इस कार्यक्रम में धर्मेंद्र बजाज, ज्योत्सना बजाज, रचना बजाज, शशि बजाज, राजेश गाबा(प्रधान गीता आश्रम), हरीश संगीतज्ञ, रमेश कुमार, ओ.पी कालरा, चंचल, रमेश कामरा, रमलाल ग्रोवर, एम.के अरोड़ा, हरविंद कोहली, ओमप्रकाश कथूरिया, चूनी लाल शर्मा, रमेश मुंजाल, द्वारका दास कक्कड़, पुनीत कथूरिया, नरेंद्र कथूरिया, राजपाल आहूजा, सुभाष ग्रोवर एडवोकेट व अन्य जन उपस्थित रहे।

आठ सौर लोगों ने दस-दस बार पाठ करके आठ हजार का आँकड़ा स्पर्श किया। पाठ की कुल संख्या कल तक 8000 रही। 172600 की पहले की संख्या कल की आठ हजार से मिला कर 180600 को छूँ गई।

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

R.N.I. No. 62787/2014

रण टाइम्स

दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, एनसीआर से प्रकाशित

बोधराज सीकरी द्वारा चलाई जा रही श्री हनुमान चालीसा पाठ की मुहिम नया रंग लाई

■ परम श्रद्धेय स्वामी दिव्यानंद महाराज द्वारा मिला बोधराज सीकरी को विशेष आशीर्वाद

■ प्रभु श्रीराम का आदर्श जीवन मानव जीवन के लिए प्रेरणापुंज : बोधराज सीकरी

राजू गुप्ता

गुरुग्राम, (रण टाइम्स)। को स्वामी दिव्यानंद महाराज के पावन और पवित्र आश्रम जोकि ज्योति पार्क गुरुग्राम में स्थित है, स्वामी जी द्वारा बोधराज सीकरी को परसो आग्रह किया कि ये जो हनुमान चालीसा के पाठ की मुहिम

आपने शुरू की है उसका आनंद बहुत सारे साधकों ने लिया और बहुत सारे साधक इस आनंद से वंचित रह गए हैं और वो आने वाले अंतिम दिन यानी सत्संग का जो चौथा दिन है उसमें भी आनंद के लिए आएंगे व पुनः यह कार्यक्रम आयोजित किया जाए। उसके परिणामस्वरूप कल आश्रम में लगभग 800 साधकों ने पहले तो एक घंटा स्वामी जी के प्रवचन का आनंद लिया और ज्ञान की गंगा में डुबकी लगाई। उसके उपरांत हनुमान चालीसा के पाठ का पठन किया गया। स्वामी जी ने अपने वक्तव्य में बताया साधक को जिज्ञासा होनी चाहिए, साधक का जीवन एक दर्पण की तरह होना चाहिए ताकि उसको दर्पण अपनी सच्चाई बता सके।

दैनिक
राष्ट्रीय हिंदी समाचार पत्र
उजाला आज तक

बोधराज सीकरी द्वारा चलाई जा रही श्री हनुमान चालीसा पाठ की मुहिम नया रंग लाई

परम श्रद्धेय स्वामी दिव्यानंद महाराज द्वारा मिला बोधराज सीकरी को विशेष आशीर्वाद

गुरुग्राम भगत शर्मा उजाला आज तक

गुरुग्राम मै स्वामी दिव्यानंद महाराज के पावन और पवित्र आश्रम जोकि ज्योति पार्क गुरुग्राम में स्थित है, स्वामी जी द्वारा बोधराज सीकरी को परसो आग्रह किया कि ये जो हनुमान चालीसा के पाठ की मुहिम आपने शुरू की है उसका आनंद बहुत सारे साधकों ने लिया और बहुत सारे साधक इस आनंद से वंचित रह गए हैं और वो आने वाले अंतिम दिन यानी सत्संग का जो चौथा दिन है उसमें भी आनंद के लिए आएंगे व पुनः यह कार्यक्रम आयोजित किया जाए। उसके परिणामस्वरूप कल आश्रम में लगभग 800 साधकों ने पहले तो एक घंटा स्वामी जी के प्रवचन का आनंद लिया और ज्ञान की गंगा में डुबकी लगाई। उसके उपरांत हनुमान चालीसा के पाठ का पठन किया गया। स्वामी जी ने अपने वक्तव्य में बताया साधक को जिज्ञासा होनी चाहिए, साधक का जीवन एक दर्पण की तरह होना चाहिए ताकि उसको दर्पण अपनी सच्चाई बता सके। व्यक्ति को अपने मन की स्थिति भी मालूम होनी चाहिए। किसी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से तुलनात्मक दृष्टिकोण से मुकाबला नहीं करना चाहिए नहीं तो जीवन में गड़बड़ी होती है। व्यक्ति को समयक श्रोता बनना चाहिए। उनके अनुसार कथा से अपराध बोध के दर्शन होते हैं। उन्होंने आगे बताया कि राज दशरथ के मन की स्थिति मृत्यु के

समय क्या थी उसके मन के ऊपर एक उस दर्पण का दृश्य नजर आ रहा था जब श्रवण कुमार के माता-पिता ने उन्हें श्राप दिया था। इस प्रकार स्वामीजी ने बताया कि आज के कई नेता संपति और सुविधाएं नागरिकों को देने में लगे हैं। इस प्रकार की संपति और सुविधाएं मयार्दा पुरुषोतम राम भी दिया करते थे परंतु मयार्दा पुरुषोतम राम उसके साथ संस्कार और कर्तव्यपरायणता भी अपने नागरिकों को और प्रजा को सिखाते थे। दुर्भाग्य की बात है कि आज का नेता ये सुविधाएं तो उन्हें दे रहा है परन्तु उन्हें संस्कारविहीन और कर्तव्यपरायणता विहीन बना रहा है जिसके कारण नागरिक आलसी बनता है।

महाराज जी ने अपने वक्तव्य में बताया कि व्यक्ति को जब किसी भी कथा या आयोजन में सम्मिलित होना हो तो ना केवल वो सुने बल्कि उस विषय का अध्ययन करें, स्वाध्ययन करें, समीक्षा करें, मंथन करें और फिर चिंतन करें। इस प्रकार वो विषय उसके मन के पटल पर बैठ जाएगा। महाराज श्री ने हनुमान चालीसा के ऐसे-ऐसे रहस्य उजागर किये जो पहले कभी नहीं सुने थे। उन्होंने प्रारम्भ में एक बार हनुमान चालीसा पाठ का संगीतमय तरीके से स्वयं गायन किया और फिर बोधराज सीकरी के मित्र गजेंद्र गोसाई जो निरंतर पिछले तीन महीनों से हनुमान चालीसा के पाठ को अपने सुर और स्वरों का एक नया रूप दे रहे हैं उसके माध्यम से उन्हें कहा कि अब आप संगीतमय तरीके से हनुमान चालीसा का पाठ करें। गजेंद्र गोसाई ने अपने मुखारबिंद से अपने मधुर वाणी से 8 बार संगीतमय तरीके से पाठ किया। तदोपरांत अंत के दो पाठ स्वामी दिव्यानंद महाराज ने अपने मुखारबिंद से गाए और उसमें लोगों को प्रेरित किया कि नृत्य भी साथ में करेंगे। आखिरी दो हनुमान चालीसा पाठ का पठन संगीतमय तरीके से उसमें लगभग 800 साधकों को डांडिया दिया गया।

ज्योति दर्पण

Website : www.jyotidarpan.com

हिन्दी दैनिक

प्रभु श्रीराम का आदर्श जीवन मानव जीवन के लिए प्रेरणापुंज : बोधराज सीकरी

Email : thedailymewat@yahoo.co.in
दैनिक मेवात

प्रभु श्रीराम का आदर्श जीवन मानव जीवन के लिए प्रेरणापुंज : बोधराज सीकरी

- दैनिक मेवात संवाददाता

गुरुग्राम। दिनांक 17-05-2023 को स्वामी दिव्यानंद महाराज के पावन और पवित्र आश्रम जोकि ज्योति पार्क गुरुग्राम में स्थित है, स्वामी जी द्वारा बोधराज सीकरी को पहले आग्रह किया कि ये जो हनुमान चालीसा के पाठ की मुहिम आपने शुरू की है उसका आनंद बहुत सारे साधकों ने लिया और बहुत सारे साधक इस आनंद से वंचित रह गए हैं और जो आने वाले अंतिम दिन यानी सत्संग का जो चौथा दिन है उसमें भी आनंद के लिए आएंगे व पुनः यह कार्यक्रम आयोजित किया जाए। उसके परिणामस्वरूप करा आश्रम में लगभग 800 साधकों ने पहले तो एक घंटा स्वामी जी के प्रवचन का आनंद लिया और ज्ञान की गंगा में डुबकी लगाई। उसके उपरांत हनुमान चालीसा के पाठ का पठन किया गया। स्वामी जी ने अपने वक्तव्य में बताया साधक की जिज्ञासा होनी चाहिए, साधक का जीवन एक दर्पण की तरह होना चाहिए ताकि उसको दर्पण अपनी सच्चाई बता सके व्यक्ति को अपने मन की स्थिति भी मालूम होनी चाहिए। किसी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से तुलनात्मक दृष्टिकोण से मुकाबला नहीं करना चाहिए नहीं तो जीवन में गड़बड़ी होती है व्यक्ति को सम्यक जीना करना चाहिए उसके अनुसार कथा से अपराध बोध के दर्शन होते हैं। उन्होंने आगे बताया कि राजा दशरथ के मन की स्थिति मृत्यु के समय क्या थी उसके मन के ऊपर एक उस दर्पण का दृश्य नजर आ रहा था जब श्रवण कुमार के माता-पिता ने उन्हें श्राप दिया था। इस प्रकार स्वामीजी ने बताया कि आज के कई नेता संपत्ति और सुविधाएं नागरिकों को देने में लगे हैं इस प्रकार की संपत्ति और सुविधाएं मर्यादा पुरुषोत्तम राम भी दिया करते थे परंतु मर्यादा पुरुषोत्तम राम उसके साथ संस्कार और कर्तव्यपरायणता भी अपने नागरिकों को और प्रजा को सिखाते

चालीसा पाठ का संगीतमय तरीके से स्वयं गायन किया और फिर बोधराज सीकरी के मित्र गजेंद्र गोसाईं जो पिछले तीन महीनों से हनुमान चालीसा के पाठ को अपने सुर और स्वरों का एक नया रूप दे रहे हैं उसके माध्यम से उन्हें कहा कि अब आप संगीतमय तरीके से हनुमान चालीसा का पाठ करें।

गजेंद्र गोसाईं ने अपने मुखारविंद से अपनी मधुर वाणी से 8 बार संगीतमय तरीके से पाठ किया तदोपरांत अंत के दो पाठ स्वामी दिव्यानंद महाराज ने अपने मुखारविंद से गाए और उन्होंने लोगों को प्रेरित किया कि नृत्य भी साथ में करेंगे। आखिरी दो हनुमान चालीसा पाठ का पठन संगीतमय तरीके से उन्होंने लगभग 8 साधकों को डांडिया दिया गया और डांडिया के माध्यम से नाचकर के माध्यम से साथ में भजन और गुरुदेव के नए-नए शब्दों का मिश्रण करके हनुमान चालीसा पाठ के साथ-साथ

राक्षसों के द्वारा किये गए अत्याचार के बारे में बताती है। तो भगवान विष्णु ने उन्हें क्या उत्तर दिया : पृथ्वी ए मेरी प्यारी पृथ्वी, मैं तेरा ताप मिटाता हूँ (यहां ताप का अभिप्राय ग्लोबल वार्मिंग से है) पृथ्वी ए मेरी प्यारी पृथ्वी, मैं तेरा ताप मिटाता हूँ दशरथ के यहां राम बनकर, अतिशीघ्र जन्म में आता हूँ। धरती अब तुम निश्चिंत रहो, अब तुम्हें न कोई भय होगा। यह धरती होगी पद पावन, धरती पर का अभिनय होगा। सुन सकते नहीं काल मेरे अत्यधिक पुकार अपनों की, ये पृथ्वी होगी वीरों की पृथ्वी न होगी रोने की।

इस प्रकार अपने मन के उद्गार रखे और अंत में वेद के एक मंत्र जो यह करते समय प्रायः 5 बार उच्चारित किया जाता है इसमें प्रजा और पशु दो शब्दों का वर्णन है। प्रजा का अभिप्राय संतान से और पशु का अभिप्राय हमारी गौमाता से है। इस प्रकार उस मंत्र की भी बोधराज सीकरी ने सकुशल व्याख्या करी और अंत में महाराज जी के चरणों में नतमस्तक हो उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया। उसके बाद प्रसाद वितरित किया गया।

इस कार्यक्रम में धर्मेंद्र बजाज, ज्योत्सना बजाज, रचना बजाज, शशि बजाज, गवेश शाखा (प्रधान गीता भवन), हरीश मोंगेनल, रमेश कुमार, ओ.पी कालरा, चंचल, रमेश कामरा, रामलाल ग्रोवर, एस.के अरोड़ा, अरविंद कोहली, ओमप्रकाश कथूरिया, चुन्नी लाल शर्मा, रमेश मुंजाल, द्वारका दास ककड़, पुनीत कथूरिया, नरेंद्र कथूरिया, राजपाल आहूजा, सुभाष ग्रोवर एडवोकेट व अन्य जन उपस्थित रहे। आठ सौ लोगों ने दस-दस बार पाठ करके आठ हजार का आंकड़ा स्पर्श किया। पाठ की कुल संख्या कल तक 8000 यानी 172600 थी पहले की संख्या कल की आठ हजार से मिला कर 180600 की हो गई।

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

RNI No.DELHIN/2015/66886

ओपन सर्च

बोधराज सीकरी द्वारा चलाई जा रही श्री हनुमान चालीसा पाठ की मुहिम नया रंग लाई

परम श्रद्धेय स्वामी दिव्यानंद महाराज द्वारा मिला बोधराज सीकरी को विशेष आशीर्वाद

प्रभु श्रीराम का आदर्श जीवन मानव जीवन के लिए प्रेरणापुंज : बोधराज सीकरी

बोधराज सीकरी द्वारा चलाई जा रही श्री हनुमान चालीसा पाठ की मुहिम नया रंग लाई।

परम श्रद्धेय स्वामी दिव्यानंद महाराज द्वारा मिला बोधराज सीकरी को विशेष आशीर्वाद

गुरुग्राम (एनसीआर टाइम) गुरुग्राम 17 मई को स्वामी दिव्यानंद महाराज के पावन और पवित्र आश्रम जोकि ज्योति पार्क गुरुग्राम में स्थित है, स्वामी जी द्वारा बोधराज सीकरी को परसो आग्रह किया कि ये जो हनुमान चालीसा के पाठ की मुहिम आपने शुरू की है उसका आनंद बहुत सारे साधकों ने लिया और बहुत सारे साधक इस आनंद से वंचित रह गए हैं और वो आने वाले अंतिम दिन यानी सत्संग का जो चौथा दिन है उसमें भी आनंद के लिए आएंगे व पुनः यह कार्यक्रम आयोजित किया जाए। उसके परिणामस्वरूप कल आश्रम में लगभग 800 साधकों ने पहले तो एक घंटा स्वामी जी के प्रवचन का आनंद लिया और ज्ञान की गंगा में डुबकी लगाई। उसके उपरांत हनुमान चालीसा के पाठ का पठन किया गया। स्वामी जी ने अपने वक्तव्य में बताया साधक को जिज्ञासा होनी चाहिए, साधक का जीवन एक दर्पण की तरह होना चाहिए ताकि उसको दर्पण अपनी सच्चाई बता सके। व्यक्ति को अपने मन की स्थिति भी मालूम होनी चाहिए। किसी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से तुलनात्मक दृष्टिकोण से मुकाबला नहीं करना चाहिए नहीं तो जीवन में गड़बड़ी होती है। व्यक्ति को समयक श्रोता बनना चाहिए। उनके अनुसार कथा से अपराध बोध के दर्शन होते हैं। उन्होंने आगे बताया कि राज दशरथ के मन की स्थिति मृत्यु के समय क्या थी उसके मन के ऊपर एक उस दर्पण का दृश्य नजर आ रहा था जब श्रवण कुमार के माता–पिता ने उन्हें श्राप दिया था। इस प्रकार स्वामीजी ने बताया कि आज के कई नेता संपत्ति और सुविधाएं नागरिकों को देने में लगे हैं। इस प्रकार की संपत्ति और सुविधाएं मर्यादा पुरुषोत्तम राम भी दिया करते थे परंतु मर्यादा पुरुषोत्तम राम उसके साथ संस्कार और कर्तव्यपरायणता भी अपने नागरिकों को और प्रजा को सिखाते थे। दुर्भाग्य की बात है कि आज का नेता ये सुविधाएं तो उन्हें दे रहा है परन्तु उन्हें संस्कारविहीन और कर्तव्यपरायणता विहीन बना रहा है जिसके कारण नागरिक आलसी बनता है। महाराज जी ने अपने वक्तव्य में बताया कि व्यक्ति को जब किसी भी कथा या आयोजन में सम्मिलित होना हो तो ना केवल वो सुनें बल्कि उस विषय का अध्ययन करें, स्वाध्ययन करें, समीक्षा करें, मंथन करें और फिर चिंतन करें। इस प्रकार वो विषय उसके मन के पटल पर बैठ जाएगा। महाराज श्री ने हनुमान चालीसा के ऐसे–ऐसे रहस्य उजागर किये जो पहले कभी नहीं सुने थे। उन्होंने प्रारम्भ में एक बार हनुमान चालीसा पाठ का संगीतमय तरीके से स्वयं गायन किया और फिर बोधराज सीकरी के मित्र गजेंद्र गोसाई जो निरंतर पिछले तीन महीनों से हनुमान चालीसा के पाठ को अपने सुर और स्वरों का एक नया रूप दे रहे हैं उसके माध्यम से उन्हें कहा कि अब आप संगीतमय तरीके से हनुमान चालीसा का पाठ करें। गजेंद्र गोसाई ने अपने मुखारबिंद से अपने मधुर वाणी से 8 बार संगीतमय तरीके से पाठ किया। तदोपरांत अंत के दो पाठ स्वामी दिव्यानंद महाराज ने अपने मुखारबिंद से गाए और उसमें लोगों को प्रेरित किया कि नृत्य भी साथ में करेंगे। आखिरी दो हनुमान चालीसा पाठ का पठन संगीतमय तरीके से उसमें लगभग 800 साधकों को डांडिया दिया गया और डांडिया के माध्यम से गायकी के माध्यम से साथ में भजन और गुरुदेव के नए–नए शब्दों का मिश्रण करके हनुमान चालीसा पाठ के साथ–साथ नृत्य का दृश्य देखने के लायक था। उसके उपरांत बोधराज सीकरी से कहा गया कि वे समापन की और आगे बढ़ें। बोधराज सीकरी ने अपने वक्तव्य में स्वामी जी का जहां एक और आभार प्रकट किया क्योंकि उन्होंने लोगों को दो दिन निरंतर हनुमान चालीसा के पाठ का संगीतमय तरीके से पठन करने का अवसर प्रदान किया। बोधराज सीकरी ने बताया कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम न केवल राक्षसों का वध करने के लिए बल्कि पर्यावरण को संतुलित करने के लिए उन्होंने जन्म लिया। क्योंकि उन्होंने बहुत ही सुंदर कविता पढ़कर सुनाई जिसमें पृथ्वी माँ भगवान विष्णु के पास हाहाकार करती हुई जाती है और राक्षसों के द्वारा किये गए अत्याचार के बारे में बताती है। तो भगवान विष्णु से उन्हें क्या उत्तर दिया : इस प्रकार अपने मन के उदगार रखे और अंत मे वेद के एक मंत्र जो यज्ञ करते समय प्रायः 5 बार उच्चारित किया जाता है। इसमें प्रजा और पशु दो शब्दों का वर्णन है। प्रजा का अभिप्राय संतान से और पशु का अभिप्राय हमारी गौमाता से है। इस प्रकार उस मंत्र की भी बोधराज सीकरी ने सकुशल व्याख्या करी और अंत में महाराज श्री के चरणों में नतमस्तक हो उनसे आशीर्वाद ग्रहण किया।
उसके बाद प्रसाद वितरित किया गया।

इस कार्यक्रम में धर्मेंद्र बजाज, ज्योत्सना बजाज, रचना बजाज, शशि बजाज, राजेश गाबा(प्रधान गीता आश्रम), हरीश संगीतज्ञ, रमेश कुमार, ओ.पी कालरा, चंचल, रमेश कामरा,रामलाल ग्रोवर, एम.के अरोड़ा, हरविंद कोहली, ओमप्रकाश कथूरिया, चूनी लाल शर्मा, रमेश मुंजाल, द्वारका दास कक्कड़, पुनीत कथूरिया, नरेंद्र कथूरिया, राजपाल आहूजा, सुभाष ग्रोवर एडवोकेट व अन्य जन उपस्थित रहे। आठ सौर लोगों ने दस–दस बार पाठ करके आठ हजार का आँकड़ा स्पर्श किया। पाठ की कुल संख्या कल तक 8000 रही। 172600 की पहले की संख्या कल की आठ हजार से मिला कर 180600 को छूँ गई।

Bharat Sarathi
A Complete News Website

बोधराज सीकरी द्वारा चलाई जा रही श्री हनुमान चालीसा पाठ की मुहिम नया रंग लाई

परम श्रद्धेय स्वामी दिव्यानंद महाराज द्वारा मिला बोधराज सीकरी को विशेष आशीर्वाद

प्रभु श्रीराम का आदर्श जीवन मानव जीवन के लिए प्रेरणापुंज : बोधराज सीकरी